भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022



# शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 07 | उदयपुर शुक्रवार 15 अप्रेल 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

## शरीरांग में छेदन की छबीली परम्परा

– डॉ. आदर्श शर्मा –

स्वास्थ्य-सौंदर्य को अधिकाधिक निखारने के लिए अपने नाक और कान छिदवाकर उनमें तरह-तरह के सुन्दर गहने धारण करने की परम्परा केवल भारत में ही नहीं, दुनियां के अनेक देशों में भी विद्यमान है। लोग अपने शरीर के विभिन्न अंगों में पीअरसिंग अथवा छिद्रण करवाकर भांति-भांति के गहने पहनते हैं।

नाक-कान छिदवाने का कदाचित पहला उदाहरण भारत में मिलता है। सात हजार वर्ष प्राचीन वेद में देवी लक्ष्मी को छिदे हुए नाक और कान में सुन्दर गहने पहने हुए चित्रित किया गया है। सुन्दर दिखने के अलावा मानव ने अपने शरीर को नाक-कान के अलावा और कई जगह से भेदा है और उनमें धातु, पत्थर, हाथीदांत, लकड़ी आदि के कलात्मक अंकन पिरोये हैं।

यूरोप में माना जाता था कि कानों में लटकी सोने की चेन आंखों की रोशनी बढ़ाती है तथा गठिया या दूसरे वात रोगों से रक्षा करती है एवं लड़कों को बुरी बला से बचाती है। ब्रिटिश मान्यता थी कि कान-नाक का छल्ला नाविक को डूबने से बचा सकता था। नाव का जहाज डूब जाएगा पर नाविक बच जाएगा। यदि किसी युगल ने एक-एक कान में छल्ला लटका रखा है तो वह बिछुड़ नहीं पायेगा।

भारत के कई समुदायों में बच्चे के जन्म के बारह दिन बाद उसके कान और नाक में मोती या अन्य गहना पहनाया जाता था। विश्वास था कि यह उसकी भूत-प्रेतों से रक्षा कर सकेगा। लड़कों को लड़कियों के गहने पहना दिये जाते थे ताकि भ्रम बना रहे।

मिस्र, चीन, रोम तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशों के लोग भी कर्ण भेदन और

नासिका भेदन कर उनमें नानाप्रकार के गहने लटकाया करते थे। इण्डोनेशिया में कान के झूमके के लिए 'आन्टिंग' शब्द प्रचलित है। इसका अर्थ होता है- 'आगे-पीछे झूलना।' ऐसी मान्यता रही कि कान के लोब जितने बड़े होंगे, व्यक्ति उतना ही धनवान, भाग्यवान, चिरायु और शक्तिशाली होगा। कानों में लम्बे भारी झूमके लटकाने के पीछे भी यही कारण रहा होगा। बोझ से कान का लोब बड़ा होता जाएगा और पहनने वाला भी उतना ही भाग्यशाली होता जाएगा। शरीर के दो स्थानों के छिद्रण को एक ही गहने से जोड़े जाने के उदाहरण भी मिलते हैं।

नाक के एक या दोनों तरफ बड़े-बड़े छेद करवाकर उनमें नथ, नथनी, बेसर, चूड़ी आदि पहनने का रिवाज रहा है। एक नाक में डेढ़ इंच तक के छेद का वर्णन भी मिलता है। हिन्दू मान्यताओं में विवाह से एक दिन पूर्व कन्या को अपनी बांयी नाक छिदवानी होती है जो इस बात का प्रतीक है कि वह अपने पति के प्रति आजीवन समर्पित रहेगी। छिदी हुई नाक में होठों तक झूलता पहनावा बुरी नजर के दुष्प्रभाव से भी बचाता है।

न्यूगिनी के लड़के अपनी नाक की बिचली हड्डी को छिवाते हैं। सीरिया की पपुआ जनजाति में लड़कों का केशकर्तन, नाक-कान छिदाई की रस्म यह इंगित करती है कि लड़का अब युवा हो रहा है और अपनी मां से उसके बन्धन ढीले पड़ रहे हैं। इस छिद्रण कर्म से जो रक्त बहता है, वह मां के गर्भ का रक्त माना जाता है।

अधरों को छेद कर उनमें धातु, कांच, लकड़ी, हड्डी, कोयला, बोतल के ढकने आदि लटकाने की भी परम्परा कई देशों में रही है। नीले पत्थरों या मोती की बनी अधरिकाएं महंगी होती थीं, जो सम्पन्नता की द्योतक थीं। डेढ़ इंच चौड़े और दो फुट लम्बे ऐसे लेवरिट की भी जानकारी मिली है।

दक्षिणी अमेरिका की एक जनजाति की लड़कियां किशोरावस्था आने पर अपने कान छिदवाती हैं। उनमें जो डाट लगाया जाता है, उसे सफेद रंगा जाता है। सहनशीलता और अच्छी श्रवण शक्ति के लिए लड़के अपने होठों को छिदवाते हैं। उन्हें तीन से पांच इंच तक और कानों को तो कई इंच तक खींच कर लम्बा कर लेते हैं। होठों का डाट लाल रंग में रंगा जाता है जिससे सम्भाषण, युद्ध और विचारों में आत्मविश्वास आ सके। इसके अलावा विभिन्न देशों की जनजातियों के लोग शरीर के अन्य अंग जैसे स्तनाग्र, नाभि, जिव्हा, बगल, छाती, भुजाएं आदि में भी छिद्रण करवाते हैं और उनमें चेन आदि गहने धारण करते हैं।

## मरणासन्न भीष्मों से नये अर्जुनों की तलाश जरूरी

-डॉ. अज्ञात -

प्रत्येक भाषा क्षेत्र में, वहां की जन-रूचि, क्षमता और परम्पराओं के अनुरूप लोकनाट्य और लोकमंच का अभ्युदय हुआ। इस लोकमंच से सम्बन्धित कठपुतली-नृत्य और स्वांग सर्वाधिक प्राचीन हैं। कठपुतली-नृत्य का प्रसार-क्षेत्र सम्पूर्ण भारत रहा है।

स्वांग महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, उत्तरप्रदेश और बिहार में प्रचलित रहे हैं। उत्तर भारत की विशेष देन है- रामलीला और नौटंकी जबकि मध्य भारत का तमाशा, ललित, गांधल और दशावतार महाराष्ट्र के, भवाई गुजरात का और यात्रा तथा गम्भीरा बंगाल के लोक-नाट्य हैं। आसाम में अकिया नाट, बिहार तथा पूर्वी उत्तरप्रदेश में विदेशिया, बिहार और नेपाल में कीर्तनिया नाटक तथा काश्मीर में भांडपथर प्रचलित हैं।

इस दृष्टि से डॉ. महेन्द्र भानावत सम्पादित 'लोकरंग' अत्यन्त ही उपयोगी ग्रन्थ है जिसमें उन्होंने देश के विविध प्रान्तों में प्रचलित लोकधर्मी नाट्य कला का दृष्टिवान संकलन किया है।

राजस्थान में प्रचलित लोकनाट्य के विविध रूपों को डॉ. भानावत ने 'ख्याल' के रूप में सटीक विश्लेषित किया है। राजस्थानी ख्याल में लगभग आधे घण्टे की 'गजर' (वाद्य-वादन) के उपरान्त भवाई की भांति सर्वप्रथम गणेशजी आते हैं और नाचते हैं और वादक उनकी आरती- 'म्हारा बेड़ा लगाओ पार गणपत थांने सिमरूं' की टेर के साथ गाता है। भवाई के ब्राह्मण या ब्रह्मा (भरमो) की ही भांति रासधारी के भरमा (ब्रह्मा) आते हैं और ब्रह्मा और मजाकिया का स्वांग प्रारम्भ हो जाता है। अन्त में ब्रह्मा धरती पर राम के अवतार लेने की सूचना देकर प्रस्थान कर देते हैं। इसके अनन्तर राम, लक्ष्मण और सीता के प्रवेश के साथ ख्याल प्रारम्भ हो जाता है।

**लोकनाट्य डूब रहे हैं। उनका ध्वनि आलेखन, फिल्मीकरण, चित्रांकन या छायालेखन ही पर्याप्त नहीं है, वयोवृद्ध सूत्रधारों और कलाकारों का सम्मान-अभिनन्दन कर उन्हें पारम्परिक लोकनाट्य के शिक्षण के लिए नियुक्त करें। वे मरणासन्न भीष्म हैं, जिनसे नये अर्जुनों को नवयुग के लिए, परम्परा के पोषण और विकास के लिए, लोकनाट्य कला का सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान ग्रहण कर लेना चाहिये।**

'रासधारी ख्याल' के अन्त में अम्बा, शीतला और एलवा देवी की आरती गाई जाती है और राम, हनुमान, महादेव, नगर-बस्ती तथा सन्तों की जय-जयकार के बाद ख्याल समाप्त हो जाता है। कभी-कभी नियमानुसार प्रस्थान की योजना भी काम में लाई जाती है। मंच पर गुप्त प्रवेश के लिए पात्र को परदे के पीछे से अथवा किसी चादर या वस्त्र में से बाहर निकाल पर प्रकट किया जाता है क्योंकि लोकमंच पर नाट्य मंच की भांति 'टेप' या 'ग्रेव' की व्यवस्था नहीं रहती।

लोकनाट्य के प्रदर्शन का कार्य प्रत्येक लोकनाट्य की एकाधिक मण्डलियां किसी धार्मिक, सांस्कृतिक या राष्ट्रीय पर्व पर स्वत: अथवा किसी देवालय की ओर से धनीमानी रंगानुरागियों के आग्रह पर उनके द्वारा बोली गई मनौती अथवा आनुष्ठानिक संकल्प की पूर्ति के लिए अथवा सामाजिकों के मनोरंजन के लिए करती हैं। प्रत्येक मण्डली का एक सूत्रधार होता है जो प्राय: रंगा, रंगला, सरदार, नायक, समाजी या स्वामी आदि विविध नामों से पुकारा जाता है।

**- शेष पृष्ठ सात पर**

# राजस्थान हॉस्पिटल : इलाज में अव्वल यूरोलोजिस्ट डॉ. गौरांग गांधी की सर्वत्र बोलती तूती

अहमदाबाद का राजस्थान हॉस्पिटल पिछले पांच दशकों से प्रमुखत: राजस्थान के निवासियों के लिए इलाज का जाना-माना चिकित्सालय बना हुआ है। इसकी विशेषता इस रूप में भी आंकी जाती है कि पूरा हॉस्पिटल और इलाज सम्बन्धी मंहगे से मंहगे उपकरणों के लिए राजस्थान निवासी भामाशाहों ने दिल खोलकर उन्मुक्त सेवा-दान किया है। दस मंजिला इस अस्पताल में रोगी को सभी तरह की समस्याओं के निवारण के लिए होनहार विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवाएं तो उपलब्ध हैं ही, बीमारों के साथ आने वाले सेवादारों के खाने-पीने की भी बेहतर व्यवस्था है।

मुझे प्रोस्टेट का इलाज कराना था। उदयपुर में कई जगह इसका इलाज सुलभ है पर कई लोगों के सुझाव तथा अनुभवों को देखते हमने अहमदाबाद जाने का मानस बनाया। वहां राजस्थान हॉस्पिटल में मैं पूर्व में भी अपने समधियों का पुख्ता इलाज करा चुका हूं। लिहाजा 25 फरवरी को मैं, पुत्र तुक्तक, पुत्री कविता तथा जामाता जितेन्द्रजी मेहता के साथ पहुंच गया।

प्रख्यात यूरोलोजिस्ट डॉ. गौरांग गांधी के बारे में कई लोगों ने जानकारी दी। जाने से पूर्व उनसे सारी बात भी कर ली जिससे हमारा भरोसा और विश्वास पक्का बना। वहां उनसे भेंट कर हम निश्चिंत हो गये। उन्होंने जाते ही इलाज शुरू कर मुख्य आवश्यक जांचें प्रारम्भ करते प्रोस्टेट का ऑपरेशन कर 02 मार्च को छुट्टी दे दी। हम रात्रि एक बजे उदयपुर आ पहुंचे। केथेडर लगा दिया और महीने भर बाद 02 अप्रेल को चेकअप के लिए आने को लिख दिया।

डॉ. गौरांग गांधी के साथ डॉ. भानावत

तुक्तक ने 02 अप्रेल से पूर्व जाना उचित समझ डॉ. गौरांग से बात की फलस्वरूप 28 मार्च को हम वहां पहुंच गये। सारी जरूरी जांचों के उपरान्त उन्होंने एक ऑपरेशन और करने को कहा। बोले, प्रोस्टेट के 25 प्रतिशत रोगियों को दूसरे ऑपरेशन की जरूरत रहती है। यह ऑपरेशन पहले की तुलना में अधिक सरल, कम समय वाला तथा लेजर से किया गया जिसे पूरा मैं टीवी पर देखता रहा। 02 अप्रेल सुबह हमें वहां से छुट्टी दे दी गई।

डॉ. गौरांग गांधी बड़े मृदुभाषी, व्यवहार कुशल और अपने फन के माहिर हैं। हॉस्पिटल की प्रमुख गतिविधियों में भी उनकी प्रमुख भूमिका है। वे पिछले 32 वर्षों से वहां सेवा-दक्ष हैं। उनके नाम में ही तीन ग (गौ, ग, गां) की आवृत्ति अनुप्रासिक छटा लिये है। गौरांग के अनुरूप वे गौर वर्णीय अंग-रंग के अध्यात्म अनुरागी हैं। गौरांग गोरांदे, पार्वती के अन्तरवासा गणेश के सर्व मंगल के प्रतीक भी हैं।

गणगौर माता की पूजा-मनौती से भी गौरांग के जन्म की सार्थकता बनती है। राजस्थान के साथ गुजरात में भी गणगौर पूजा की बड़ी मान्यता है। छेद वाली मटकी घुड़ल्या सिर पर लिए बालिकाएं इन दिनों घूमर नृत्य में घुमाती हैं। वह घुड़ल्या गुजरात का ही ऐतिहासिक प्रवाद लिये है। अपनी गणगौर पुस्तक में मैंने इसका जिक्र किया है।

गणगौर से पुत्र प्राप्ति की घटनाएं तो हर प्रान्त में मिलती हैं। राजस्थान के बीकानेर में ही सेठ उदयमल ढड्ढ़ा के कोई पुत्र नहीं होने से गणगौर माता की पूजा में मनौती स्वरूप पुत्ररत्न की कामना की सो चैत्र शुक्ला तृतीया को, गणगौर के दिन ही चांदमल के रूप में उन्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। फलस्वरूप ढड्ढ़ों के चौक में ढड्ढ़ाजी की हवेली में गणगौर के साथ पुत्र रूप भाइया की पूजा प्रारम्भ हुई। डेढ़ सौ वर्ष पुरानी यह परम्परा मेले के रूप में आज भी वहां जीवन्त है। यह बैठी गणगौर मेला है जिसमें सवारी-जुलूस जैसे आयोजन नहीं होते हैं।

यह गणगौर नख से सिर तक सोने, हीरे, पन्ने, माणक, मोती जैसे कीमती जवाहरात से जड़ी हुई है। आभूषणों में सोने में जड़ाऊ बोर, मोती लगा टीका, बोर के नीचे खांचा जोड़ी, नाक में हीरे की मोती जड़ाऊ नथ, गले में हीरा पन्ना माणक मोती वाला कंठसरी गलपटिया, टेवटा, चंदन हार, हाथ में मातियों की बंगड़ी, गजरे, चूड़ियां और मटरिया, अंगुलियों में छल्ला तथा बींटा, कमर में जड़ाऊ कन्दोरे, पांव में बारह गहनों का सेट। इसी तरह भाइया के आभूषणों में मोतियों की टोपी, कानों में ऊपर भंवरिये तथा नीचे मोती लगे लोंग, गले में पन्ना का कंठा, हाथों तथा पांवों में कड़े शोभित हैं। यह गणगौर पुलिस के कड़े पहरे में प्रदर्शित की जाती है। ऐसी कीमती गणगौर अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगी।

यहां सी.ओ.ओ. (चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर) राजेश्वरी खमेसरा का जिक्र अत्यन्त आवश्यक है जिन्होंने हमें कई तरह से सहयोग किया। वे उदयपुर की हैं। उनके पति भी वहीं सुविज्ञ चिकित्सक हैं। राजेश्वरी ने बताया कि कोरोना काल में अस्पताल की गतिविधियों तथा मरीजों के साथ आने वाले सेवादारों के प्रति कई तरह की पाबन्दियां लगा दी गई थीं किन्तु अब धीरे-धीरे स्थितियां ठीक हो रही हैं। हमें विश्वास है कि पूर्व की तरह ही राजस्थान हॉस्पिटल की सेवाएं बेहतर आदर्श सिद्ध होंगी।

**- डॉ. गौरांग गांधी, मो. 9825043962**

# मिठाइयों में मन चंगा करते सूरज चन्दा

पारसोला के सूरज चन्दा जैन होने के नाते हमसे सहज घुलमिल गये। अहमदाबाद के राजस्थान हॉस्पिटल में कमरा नं. 409 में हमारे साथ 29 से 31 मार्च तक रहे। इनका हार्ट का ऑपरेशन पहले हो चुका था मगर पेट में पानी भर जाने की समस्या लेकर यहां आये। वे बड़े मनमौजी, स्नेहिल बातचीत तथा अतीत में मिठाइयों के शौकीन रहने के कारण हर समय उन मिष्ठान्नों के स्वादों का ही जिक्र करते रहे। शूगर होने से अब मिठाई खाना मना था सो अवचेतन से वह पुरानी स्वाद लिप्सा छोड़ नहीं पा रहे थे।

सूरज चन्दा परिवार

एक और प्रसंग से भी हमारी उनकी नजदीकी आत्मीयता हो गई। मेरी जन्मस्थली कानोड़ होने से वे कहते रहे, छात्र जीवन में एक टूर्नामेंट में जब वे कानोड़ आये तो उनकी लम्बी हाईट देख दूसरे प्रतिभागी मन-ही-मन कुढ़ने लगे और कहने लगे, इस लम्बू को मजा चखाना है। मैंने भी ठान लिया कि मजा तो वे क्या, मैं ऐसा चखाऊंगा कि ताजीवन याद करते रहेंगे और यही हुआ। कबड्डी प्रतियोगिता में ऐसा जौहर दिखाया कि प्रतिभागी चारों खाने चित्त हो गये। वे वहां के आयोजक स्कूल जवाहर विद्यापीठ को भी याद करते रहे और होस्टल के अधिष्ठाता सुन्दरलाल मुर्डिया की प्रशंसा ही करते रहे। बाद में उन्होंने अपने छोटे भाई को भी वहां पढ़ने भेजा जिसकी कोरोना काल में दुखद मृत्यु हो गई।

कानोड़ के जिक्र में वहां के प्रसिद्ध रहे लक्ष्मण दादा के खोखे और मोड़ाबा की मरमरी के स्वाद को कई बार रेखांकित करते रहे। बोले, खोखे इतले स्वादिष्ट थे कि ढाई सौ ग्राम तो वे वहां खड़े-खड़े ही खा जाते। मरमरी मोटी नमकीन जिसे डांखले भी कहते, एकबार खाकर पानी पी लो तो दो-चार घण्टे तक तृप्ति देती। मैंने जब उनसे कहा कि कानोड़ के चाकू भी प्रसिद्ध रहे हैं तो वे बोले कि वहां के चाकू तो आज भी हर घर वाले वापर रहे हैं।

एक जिक्र में वे बोले कि उन्होंने ऊंठाला (वल्लभनगर) का कलाकन्द और मावली की रबड़ी भी खूब खाई है। उन्हें जगह-जगह भ्रमण का शौक रहा है। जहां भी गये, सबसे पहले वहां की प्रसिद्ध मिठाई का पता लगा उसका भरपेट स्वाद लिया।

उनका सूरज चन्दा नाम भी अजीब ही लगा। तुक्तक ने आखिर पूछ ही लिया तो बोले, चन्दा नाम मेरी पत्नी का है जो यह मेरे साथ है। यह पारसोला के पास के गांव की है। मेरी सासूमां ने मुझे हर समय एक-से-एक उम्दा मिठाइयां बनाकर खिलाई हैं।

पत्नी का साथ मेरे लिए सदैव ही शकुनदायक रहा सो मैंने अपने नाम के साथ उसका नाम भी जोड़ लिया। इससे मेरी पहचान इतनी हो गई कि यही नाम प्रत्येक की जबान पर फबता है। आप पारसोला आयें, मुझे सूरज चन्दा के नाम से कहीं भी पूछें, हर व्यक्ति आपको मेरा घर, प्रतिष्ठान बताकर मुझसे भेंट करा देगा।

उनकी बातों में कई बार सासूमां का जिक्र और मिठाइयों का जायका जीवन्त होता रहा। कविता और तुक्तक उनकी बातों के सर्वप्रिय रसिक श्रोता बने रहे। तुक्तक तो उनकी कथनी का ऐसा हुंकारची बना कि भाभीजी से कहता, ''ये भाई साहब आज भी घोर अतीतजीवी बने हुए हैं। आप इन्हें एकबार खूब छककर जितनी मिठाइयां ये खाना चाहें, भरपेट खिला दें ताकि इन्हें मिठाई-प्रकरण से मुक्ति मिले।''

**- सूरज चन्दा, मो. 6376254979**

# वलाद में काली कल्ला धाम के दर्शन

अहमदाबाद हॉस्पिटल से हम दिन को एक बजे करीब निकले। नवरात्रा का स्थापना दिवस होने से यह उचित समझा गया कि वलाद गांव में काली कल्ला धाम के दर्शन कर लिये जांय। वलाद लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ का प्रमुख स्थल होने से पहले हमारा यहीं आना-जाना होता रहा। यह स्थान अहमदाबाद-हिम्मतनगर हाईवे पर स्थित है। अहमदाबाद से आधे घण्टे में दो बजे हम यहां पहुंच गये। कल्लाजी महाराज की चौकी लगी हुई थी। पहले इसके मुख्य सेवक सरजुदासजी वैष्णव थे जो 'बापूजी' के नाम से जाने जाते थे। उनके निधन के बाद उनके सुपुत्र अनिल वैष्णव ने उनकी पाट गादी सम्भाली।

अनिल वैष्णव के साथ डॉ. भानावत

सन् 1994 में बापूजी ने सलूम्बर के पास आसपुर में विजवामाता मन्दिर का निर्माण कर वहां गादी प्रारम्भ कर दी तब से हमारा वलाद की बजाय आसपुर ही आना-जाना होता रहा। लम्बे समय के बाद वलाद आकर देखा तो उसका कल्पनातीत विकास और विस्तार पाकर अनिलजी को शाबाशी दी कि उन्होंने अपने पिताश्री की विरासत को बड़ी श्रद्धा, आस्था और लगन के साथ सम्मोहक तथा श्रद्धालुओं के लिए सर्व सुविधायुक्त बना दिया है।

गादी-दर्शन का संकेत पा मैं, तुक्तक और कविता पहुंचे तो पुरानी स्मृतियों की दिव्य अनुभूति होनी स्वाभाविक थी। बापूजी की तरह ही अनिलजी की गादी पाकर मुझे कई तरह का सुखद अहसास होता रहा। दर्शनार्थियों से बातचीत, समस्या निराकरण, शक्ति (तलवार) के स्पर्श से रोग निवारण का तरीका, बीच-बीच में चिलम-तमाखू का कश, प्यास बुझावन, सेवक के माध्यम से आशार्थी को भलावण, सन्देश, आने वाले समय की प्रमुख भाखणी (भविष्य कथन), देववाणी सबकुछ बापूजी के सदृश पाकर मुझे असीम आत्मसुख मिला। पूर्व में मेरे साथ यहां आने वालों में डॉ. सुधा गुप्ता के अलावा मेरे परिवार का कोई-न-कोई सदस्य रहता था।

गादी दर्शनोपरान्त हमें भोजन-प्रसादी लेने को कहा गया। इतने में अनिलजी भी गादी पूरी का आ गये। करीब घण्टे भर उन्होंने हमें वे सारे स्थल बताये जो उनके द्वारा सर्वथा नये बनवाये गये। सभा हॉल, सम्मेलन हॉल, भोजनशाला, गौशाला के साथ ही जो खेजड़ी वृक्ष खुला चबूतरी शक्ल लिये था उसे अच्छे कक्ष में तब्दील कर पूजास्थल के रूप में विकसित कर दिया।

वह यज्ञस्थल भी देखा जो स्थायी रूप से दर्शनीय बना दिया गया था। इसी हवनकुण्ड में 1985 की नवरात्रा की नवमीं को एक अद्भुत यज्ञ का आयोजन किया गया। मालिक ने तब हमें बताया था कि 5 हजार वर्ष पूर्व ऐसा यज्ञ जनमेजय ने कराया था जिसमें सारे जगत के नागों का दाह हो गया था। बचा तो केवल एक वासुकि जो जमीं फाड़ ठेठ नीचे चला गया था।

यह यज्ञ जहां हुआ उस स्थल का नाम 'नागदाह' पड़ा जो अब नागदा (जंक्शन) के रूप में मध्यप्रदेश में है। जब मैंने आदिवासी भीलों के गवरी नामक नृत्यानुष्ठान पर पीएच.डी. की तब उसमें वासुकि की भारतगाथा नाम से एक बड़ी गाथा सुन लिपिबद्ध की जिसमें सृष्टि के उद्भव के अनेक तथ्य हाथ लगते हैं। यह यज्ञ अहमदाबाद में हुए भयंकर दंगों की पुनरावृत्ति रोकने के लिए किया गया था।

बापूजी ने आसपुर में जो विजवामाता मन्दिर स्थापित किया वह विजवा नन्दबाबा की लड़की नन्दा है। वही विंध्यवासिनी देवी है। लोक में वही वीजासण माता नाम से लोकप्रिय है। आसपुर में इसी विजवामाता के सम्मुख हवनकुण्ड में बापूजी सरजुदासजी की अन्त्येष्टि की गई तब मैं भी शरीक हुआ था।

इस दौरान अनिलजी ने अन्तःप्रेरणा से कल्लाजी राठौड़ विषयक जो लेखन तैयार किया वह भी दिखाया जिसका शीघ्र प्रकाशन कर जनसुलभ करने को कहा। करीब 4 बजे हमने यहां से विदाई ली।

वलाद से चलकर हमने शामलाजी के दर्शन किये। चतुर्दिशा से शामलाजी के दिव्य दर्शन का यह मंदिर विशाल फैले परिसर में आत्मसुख की अनुभूति दे गया। चित्तौड़ से निष्कासन के पश्चात मीरांबाई का सर्वाधिक भ्रमण क्षेत्र गुजरात बना। मीरां ने यहां शामलाजी के दर्शन भी किये। सर्वाधिक मान भी मीरां को गुजरात ने दिया। आज भी वह गुजरात में सर्वाधिक गाई जा रही है।

कल्लाजी राठौड़ पर मैंने सर्वथा नई जानकारीपरक 'लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़' नाम से एक पुस्तक लिखी जो 2019 में राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर से प्रकाशित हुई।

**- अनिल वैष्णव, मो. 9624423724**

स्मृतियों के शिखर (141) : डॉ. महेन्द्र भानावत

# सरल चित्त की समग्र पहचान देने वाले दोहा सम्राट ए. बी. सिंह

जीवन भर एक ही विधा में, एक ही छन्द लेकर रचनाकर्म करने वाले बहुत कम अपवादस्वरूप ही मिलते हैं। ऐसे लेखनधर्मी तो मिले जिन्होंने एक निश्चित समय तक संकल्पपूर्वक प्रतिदिन निश्चित संख्या में दोहे लिखे। ऐसे में डॉ. ए. बी. सिंह हमारे बीच सर्वप्रकारेण अभिनन्दनीय हैं जो बिना संकल्प लक्ष्यबद्ध होकर संख्यातीत सटीक दोहे लिख चुके हैं। सौ से अधिक तो उनका सतसई-साहित्य ही प्रकाशित हो चुका है। यह क्रम अभी भी उसी गति से अहर्निश बना हुआ है।

दोहा हिन्दी साहित्य का दो पंक्तियों वाला तेरह-ग्यारह मात्रा का सबसे छोटा छंद है। महाकवि बिहारी, कबीर, रहीम आदि ने इसी छंद में काव्य रचना कर प्रसिद्धि पाई। इन कवियों ने इस छोटे से छंद में जो जीवन-सत्व उड़ेला और सार की बात कही उसके कारण उनका प्रचलन पोथियों और प्रबुद्धों में ही नहीं, लोकजीवन और ग्रामीण समुदाय के कण्ठ-हियों तक देखने को मिलता है। 'देखन में छोटा लगै, घाव करे गंभीर' जैसी उक्ति दोहे के लिए ही कही गई है।

वीर भूमि चित्तौड़ के ए. बी. सिंह (अमरेन्द्र बहादुर सिंह) ने इसी छंद से जीवन-रस ग्रहण कर 24 वर्ष की उम्र से लिखना प्रारंभ किया और निरंतर लिखते-लिखते अब तक एक लाख से अधिक दोहों के प्रणेता बन गए हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि ये दोहे केवल कागज-पानड़ों में ही कैद नहीं हैं। इनको संग्रह करती 50 से अधिक सतसइयां प्रकाशित हो चुकी हैं और इतनी ही पांडुलिपियां प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं। पहली सतसई का प्रकाशन सन् 1994 में 'सबके हित मैंने लिखी' नाम से हुआ जिसका अंग्रेजी एवं उर्दू में भी अनुवाद हो चुका है। 'चिट्ठी आई गांव से' नामक इनकी पचासवीं सतसई का प्रकाशन सन् 2006 में हुआ।

'समुद्र मंथन' नाम से सन् 2001 में इनका ग्यारह हजार दोहों का संग्रह निकला और 2005 में एक और संग्रह 'संगम' नाम से आया जिसमें 5151 दोहे निबद्ध हैं। ए. बी. सिंह की यह अचरज भरी उपलब्धि 'न भूतो' तो है ही पर 'न भविष्यति' के लिए इनके पास अथाह दोहों का खजाना है और निरंतर सृजनरत रहकर जो लिखा जा रहा है वह भी कम श्लाघनीय नहीं है। 'समुद्र मंथन' की प्रति जब ए. बी. सिंह मुझे भेंट करने आये तब मैं उन्हें लेकर अस्थल आश्रम के महंत मुरलीमनोहरशरण शास्त्री के पास गया जहां उनसे लोकार्पण करवाया और बड़ी देर तक साहित्यिक चर्चा का दौर गरमाता रहा।

दोहा छंद को ए. बी. सिंह ने संत प्रकृति का छंद कहा जो सर्व-साधारण से लेकर विशिष्टों तक में अपनी पहचान रखता है। उनके अनुसार-

कविताओं के बीच में, दोहा जैसे संत।
छोटा बनकर दे रहा, सबको खुशी अनंत।।

किसी भी संवाद, घटना किंवा परिस्थिति में सहज बने रहने और रमण करने के लिए दोहा आदर्श, उदाहरणीय, अनुकरणीय एवं अक्लमंदी के रूप में प्रस्तुत हुआ मिलता है। जैसे मुंह में दंत-पंक्ति या फिर दंत बीच जिह्वा शोभित रहती है वैसे ही कविता में दोहा अपनी आतिशबाजी करता पाया जाता है।

ए. बी. सिंह ने किसी वर्ग जाति सम्प्रदाय या समाज विशेष के लिए दोहे नहीं लिखे। उपदेश देने अथवा पाखंडियों के पराभव के लिए भी नहीं लिखा। श्रेष्ठीजनों को सबक देने अथवा कदाचारियों को फटकारने के लिए भी कलम का सहारा नहीं लिया। उन्होंने आम आदमी के लिए लिखा और कहा- ''मैंने अपने लेखन में सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखकर कठिन परिश्रम करते रहने पर जोर दिया है। इसे मैं आम आदमी तक पहुंचाना चाहता हूं क्योंकि मैं लिखता भी आम आदमियों के लिए ही हूं। आम ही इस देश का असली मालिक है और उसी के द्वारा देश की सभ्यता एवं संस्कृति फलती-फूलती दिखाई पड़ रही है। इसके लिए आम आदमी को यह अहसास दिलाना जरूरी है कि उसमें काम करने की पूर्ण क्षमता है। यदि वह समूह रूप में श्रमशील बने रहकर काम करता रहे तो रोटी, कपड़ा और मकान ही नहीं; टीवी, मोबाइल, टेलीफोन तथा टाई भी प्राप्त कर सकता है जो आज की आवश्यकता बन गई है।''

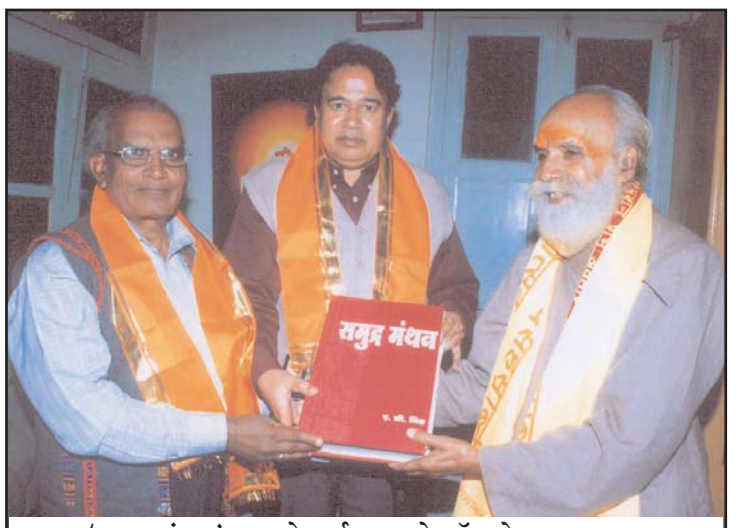

'समुद्र मंथन' का लोकार्पण करते डॉ. महेन्द्र भानावत, ए. बी. सिंह तथा महंत मुरली मनोहर शरण शास्त्री

ए. बी. सिंह की दृष्टि में महत्व अकेले व्यक्ति का नही, समूह का है। इस देश की परंपरा भी यही रही जो किसी एक व्यक्ति से ख्यात नहीं हुई-

नहीं अकेले से चले, दुनिया हो या देश।
तभी तीन इसमें लगे, ब्रह्मा विष्णु महेश।।

**दोहे केवल कागज पानड़ों में ही कैद नहीं हैं। इनको संग्रह करती 50 सतसइयां प्रकाशित हो चुकी हैं। पहली सतसई का प्रकाशन सन् 1994 में 'सबके हित मैंने लिखी' नाम से हुआ जिसका अंग्रेजी एवं उर्दू में भी अनुवाद हो चुका है। 'चिट्ठी आई गांव से' नामक इनकी पचासवीं सतसई का प्रकाशन सन् 2006 में हुआ। 'समुद्र मंथन' की प्रति जब ए. बी. सिंह मुझे भेंट करने आये तब मैं उन्हें लेकर अस्थल आश्रम के महंत मुरलीमनोहरशरण शास्त्री के पास गया जहां उनसे लोकार्पण करवाया और बड़ी देर तक साहित्यिक चर्चा का दौर गरमाता रहा। ए. बी. सिंह ने किसी वर्ग जाति सम्प्रदाय या समाज विशेष के लिए दोहे नहीं लिखे। उपदेश देने अथवा पाखंडियों के पराभव के लिए भी नहीं लिखा। श्रेष्ठीजनों को सबक देने अथवा कदाचारियों को फटकारने के लिए भी कलम का सहारा नहीं लिया। उन्होंने आम आदमी के लिए लिखा।**

जे. के. पॉवर शंभूपुरा के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट रहे ए. बी. सिंह मानते हैं कि व्यक्ति चाहे कहीं काम करे, उसका श्रमशील होना पहली शर्त है। इसके लिए सबसे छोटे जीव चींटी से हमें सीख लेनी होगी जो जीवनपर्यन्त बड़ी बहादुरी और सयानेपन से अथक बनी रहती है।

हमारे देश का ही यह गौरव है कि यहां व्यक्ति के संपूर्ण जीवनचक्र की समय-सारिणी को चार आश्रम में बांट दिया गया है तब भी जीवन को सुव्यवस्थित जीने के लिए हाथ-पांव तो चलाने ही पड़ते हैं। वे कहते हैं-

खाना सबको चाहिए, चोर सिपाही संत।
फिर क्यों श्रम करते नहीं, सब जीवनपर्यंत।।

यदि प्रत्येक मनुष्य ने इसका महत्व समझ लिया तो परिवार हो चाहे फेक्ट्री उसे अनाथालय बनने से बचाया जा सकेगा। हाथ तो महत्वपूर्ण हैं ही पर पांव भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं जो पूरे तन का भार लिए सदैव गतिवान बने रहते हैं इसलिए हमारे यहां बड़ों के पावं छूकर धोक लगने और आशीर्वचन पाने का माहात्म्य है। दोहा सम्राट ए. बी. सिंह की यह नई उद्भावना भी है जिसके लिए वे कहते हैं-

कांकर कांटे कीच में, सहकर तन का भार।
चलने वाले पैर को, पूज रहा संसार।।

ए. बी. सिंह ने अपने लेखन को सामान्य व्यक्तियों के जीवनधर्म का प्रभावी संबल बनाया है। सुदूर ढाणियों में बैठे जनमानस को भी उनके दोहों ने सकारात्मक जीवन जीने की सीख दी है। ग्रामीण क्षेत्र के ऐसे कई व्यक्ति उनके संपर्क में आये जिन्होंने उनके दोहों से सामाजिक परिवर्तन किया। बाल विवाह का चलन बंद हुआ। सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति मिली। शिक्षा का प्रसार बढ़ा। श्रम के महत्व का प्रतिपादन हुआ और बालश्रमिकों की तालिका भी शून्य तक पहुंची। एक व्यक्ति ने तो उन्हें लिखा भी कि उनकी एक पुस्तक के कारण उसके घर का क्लेश मिट गया और प्रत्येक दिन संध्या को उनके दोहों का गांव की चौपाल पर पठन-पाठन होने लगा।

ए. बी. सिंह स्वयं अच्छे पर्यावरण इंजीनियर हैं। उन्होंने अपने थर्मल पॉवर में ही कोयले से चलने वाले प्लांट को धुंआ रहित करने में भारी सफलता अर्जित की है। थर्मल पॉवर को चलाने के लिए प्रतिदिन 500 टन कोयले का इस्तेमाल होता लेकिन उसकी दोनों चिमनियों से रत्तीभर भी काला धुंआ नहीं निकलता। प्रदूषण रहित वातावरण से प्लांट का समस्त परिवार गहन हरियाली और फूलवारी से आच्छादित रहा जो किसी को भी अचरज में डाल सकता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि ए.बी. सिंह के दोहे किताबों की ही शोभा ही नहीं बनें, आम आदमी तक उनकी पहुंच बढ़ी है। उनके दोहों का उपयोग गांव के सरपंच भी करते हैं तो प्रौढ़ाएं भी उन्हें बांच प्रौढ़ शिक्षण में पारंगत हो रही हैं। बूढ़े-बूढ़ियों में ये दोहे चौपाई नाम से चौपाल जगा रहे हैं तो श्रमकार इनसे अपने श्रमकौशल में दक्ष बना हुआ है। कॉलेज और कवि सम्मेलनों में भी उनके दोहे खूब चल रहे हैं। एकबार एक महिला कॉलेज में एक लड़की ने उनसे प्रश्न किया कि लड़कियों के लिए भी आपने कुछ लिखा हो तो सुनायें तब ए.बी. सिंह ने यह दोहा सुनाया-

सुंदरता घटती चले, अगर दिखाओ अंग।
तन अरू अंग छिपा भला, लोग न करते तंग।।

यह सुन वह लड़की बोली - 'लगता है, आप आधुनिकता के खिलाफ हैं।' इस पर ए. बी. सिंह ने कहा- 'यदि कोई महिला खुले में जेवर की टोकरी लेकर निकले तो मैं नहीं समझता कि वह सुरक्षित अपने घर पहुंच पायेगी।' यह सुन वह लड़की निरूत्तर हो गई।

ए. बी. सिंह के दोहों का विषय-विस्तार बड़ा व्यापक है। नौ रस ही नहीं अपितु जीवन जीने के जितने भी रस हो सकते हैं उन सबमें उनका काव्य सृजित हुआ है। अधिकतर दोहों का सृजन उन्होंने बाहर रहते किया। कभी हवाई जहाज में उड़ान भरते हुए तो कभी रेल की लम्बी यात्रा करते हुए। कभी बस की संक्षिप्त यात्रा में तो कभी टेक्सी-टेंपो की सवारी करते दोहे लिखे हैं।

आम आदमी की क्रियाशीलता को अपने लेखन की प्रेरणा मानने वाले ए. बी. सिंह का यह कथन उल्लेखनीय है, ''मेरे लेखन में मेरा कुछ नहीं है। जनजीवन से जो कुछ मैं ग्रहण करता हूं, उसी को दोहों के रूप में परोस देता हूं। मेरे दोहे उस सब्जी की दुकान की तरह हैं जहां सभी तरह की सब्जी सजी हुई है। यह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह कौनसी सब्जी ग्रहण करे और कौनसी छोड़े। आपको बैंगन खराब लगता है तो आलू ले लें, रतालू ले लें, चाहें अरवी लें चाहें तो आल। जिसको जो दूहा जचे, रूचे वह ले, बाकी छोड़ दे।''

अपने सरल सहज एवं बोधगम्य दोहों में ए. बी. सिंह ने लगभग 250 विषयों को समाहित किया है जिनमें प्रमुखत: श्रम, साक्षरता, कृषि, नशामुक्ति, पर्यावरण, बाल विवाह, शिक्षा प्रसार, जल संरक्षण, बाल श्रमिक, एड्स, साम्प्रदायिक सद्भावना जैसे विषयों को प्राथमिकता दी है।

अपनी सतसई पुस्तकों का नामकरण भी उन्होंने इसी प्रकार किया है यथा- कर्म सदा करते चलो, मानवता ही धर्म है, सदा सादगी से रहें, नैतिक मूल्य बचाइये, अनेकता में एकता, भारत बने महान, ज्ञान तीसरी आंख, चारद मैली मत करो, अच्छाई अपनाइये, दुनिया एक कुटुम्ब है, समय बड़ा बलवान, नहीं सांच को आंच, कर्मभूमि से प्यार, ढाई आखर प्रेम का, राष्ट्र धर्म सबसे बड़ा, सच्चा सुख संतोष, फैले अच्छी भावना, सारे मनुज समाज, भावनात्मक एकता आदि।

ए. बी. सिंह अपने सृजन के लिए कई संस्थानों से सम्मानित एवं अभिनंदित हो चुके हैं। इनमें उन्हें मिली दोहा सम्राट की उपाधि विशेष अतुलनीय और महत्वपूर्ण है। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से 'हिन्दी सतसई परंपरा एवं ए. बी. सिंह का सतसई साहित्य' विषय पर पीएच-डी के लिए शोध कार्य हो चुका है। सच तो यह है कि उनके दोहे सरल चित्त की समग्र पहचान देनेवाले हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 अप्रेल 2022

*सम्पादकीय*

# अखबारों की विश्वसनीयता

किसी भी अखबार का लोकप्रिय होना एक बात है जबकि पाठकों में उसकी विश्वसनीयता होना दूसरी बात। जो अखबार सर्वाधिक लोकप्रिय होने पर भी उतना ही विश्वसनीय हो, यह जरूरी नहीं है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

उदयपुर के अन्तिम महाराणा महाराजप्रमुख भूपालसिंहजी का देवलोक हो गया किन्तु तीन दिन तक यह खबर गुप्त रखी गई। किसी तरह दैनिक हिन्दुस्तान के संवाददाता हीरालाल आचार्य को यह पुख्ता खबर हाथ लगी। उन्होंने उसे प्रकाशनार्थ हिन्दुस्तान को भेज दी। तीसरे दिन वह खबर पढ़ पाठकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी दिन महलों से महाराणा के निधन की खबर जारी की गई।

एकबार उदयपुर के सूचना केन्द्र में सत्यकेतु विद्यालंकार का व्याख्यान रखा गया। उन्होंने बताया कि एक सम्पादक अथवा खबरनवीश को अपने पर पूरा भरोसा, समाचारों की विश्वसनीयता तथा जरूरत होने पर निर्णय लेने की भविष्य-पटु होने की अद्‌भुत क्षमता लिए सजग रहना पड़ता है।

उन्होंने एक विश्व सम्मेलन का जिक्र किया जिसमें देर रात कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय होना था। अपने पर पूर्ण भरोसा रखते हुए उन्होंने नवभारत टाइम्स में उस निर्णय का हवाला देते बड़ी खबर बना रात दो बजे अखबार छोड़ दिया। सुबह किसी अखबार में वह खबर नहीं थी जबकि उनके अखबार में सूर्खियों में वह खबर पढ़कर पाठकों का उसके प्रति पक्का भरोसा और विश्वास बढ़ गया।

सुभाषचन्द्र बोस के बारे में लोगों में यह बात बैठ गई कि वे जीवित नहीं हैं। उसी दौरान नवभारत टाइम्स ने यह बहस छेड़ दी कि वे जिन्दा हैं। एक बाबा के रूप में उनके जीवित होने के प्रमाण स्वरूप उस पत्र में धारावाहिक रूप से कई किश्तें छपीं। इससे पाठकों की उत्सुकता इतनी बढ़ी कि नवभारत टाइम्स की 60 हजार प्रतियां छपनीं बढ़ गईं।

उस दौर से लेकर आज के समय के अखबारों को देखें तो पता चलेगा कि कुकुरमुक्ता की तरह जगह-जगह उनका प्रकाशन तो हो रहा है पर विश्वसनीयता उतनी नहीं लग रही। अतः यह कतई जरूरी नहीं कि जो अखबार सर्वाधिक छप रहा हो वह पाठकों में उतना ही विश्वसनीय हो।

# महावीर युवा मंच द्वारा शोभायात्रा का भव्य स्वागत

**उदयपुर (ह. सं.)।** महावीर जयंती पर महावीर जैन परिषद के नेतृत्व में टाउन हॉल से प्रारंभ हुई शोभायात्रा में महावीर युवा मंच के मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर, अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत, महामंत्री हर्षमित्र सरूपरिया के नेतृत्व में मंच पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने विभिन्न झांकियों, वाहन रैली एवं पदयात्रियों का भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर अजय पोरवाल, संजय नागोरी, मनोज मुणेत, विक्रम भंडारी, दिलीप मोगरा, राजेश जैन, ओमप्रकाश पोरवाल, कमल कावड़िया, बसंत खिमावत, महेश कोठारी, रमेश सिंघवी, आलोक पगारिया, अर्जुन खोखावत, अरविंद सरूपरिया, भगवती सुराणा, कुलदीप नाहर, मुकेश हिंगड़, नीरज सिंघवी, निर्मल पोखरना, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष प्रमीला सतीश पोरवाल, रश्मि पगारिया, विजया सरूपरिया, नीता खोखावत, लीला पोरवाल, प्रमीला अजय पोरवाल, राखी सरूपरिया, मंजू सिंघवी, रंजना भानावत, रितु सिंघवी, मधु सुराणा, अनिता नागोरी, ललिता कावड़िया, शुभा हिंगड़, कविता मुणेत, प्रवीणा पोखरना, कांता खिमावत आदि उपस्थित थे।

रैली के बाद मंच पदाधिकारियों की तारक गुरु जैन ग्रंथालय में बैठक आयोजित की गई जिसमें आगामी वर्ष के कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। इस दौरान वरिष्ठ सदस्य महेश कोठारी का जन्मदिन मनाते हुए आगामी वर्ष में महावीर जयंती पर स्व. सुनीता कोठारी की स्मृति में वृहद स्तर पर सेवा कार्य आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

# डॉ. महेन्द्र भानावत को मिला प्रतिष्ठित श्रीकाग अलंकरण

## साहित्य मानव की वृत्तियों को पुनर्जीवित करने की संजीवनी : प्रो. सारंगदेवोत

## मानवीय वृत्तियों का पोषण साहित्य सृजन से ही संभव : डॉ. भानावत

## मूल्यों की स्थापना में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका : प्रो. जॉनी

**उदयपुर (ह. सं.)।** जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के प्रतानगर स्थिति आईटी सभागार में 13 अप्रेल को लोकसाहित्य में उल्लेखनीय कार्य करने वाले डॉ. महेन्द्र भानावत को मॉ सोनल धाम गडवाड़ा की अधिष्ठात्री पूज्या कंकू केसर आई, कुलाधिपति प्रो. बलवंत राय जॉनी, कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, पर्यावरणविद् डॉ. राजेन्द्र सिंह, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच द्वारा संत मुरारी बापू द्वारा प्रतिस्थापित श्री काग पुरस्कार अलंकरण से नवाजा गया। अलंकरण के तहत 51 हजार रूपये का चेक, शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह दिया गया।

कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि साहित्य व वास्तविक जीवन में गहरा सम्बंध है। साहित्य व्यक्ति को न केवल कलात्मक रूप से विकसित करता है वरन् जीवन के क्लिष्ट समझे जाने वाले मर्म को सहजता और सरलता से समझने और अंगीकार करने की योग्यता व क्षमताएं विकसित करता है। साहित्य की विविध विधाओं, भाषा के सामर्थ्य और शक्ति समझने की आवश्यकता है। इसे समझने वाला न केवल अपने आसपास के वातावरण को समझता है अपितु जीवन के सत्य को प्राप्त कर लेता है। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है, एक ऐसा प्रकाश पुंज है जो मानवता के लुप्त प्रायः हो रहे गुणों व वृत्तियों को पुनर्जीवित करने की संजीवनी है।

साहित्य और संत वाणी दोनों ही समाज के परिमार्जन करने तथा उसे परिष्कृत की कामना से युक्त होने से सामाजिक समरसता व राष्ट्र-उन्नति के साथ-साथ सांस्कृतिक परम्पराओं के वाहक है। उसका मूर्त स्वरूप है। वर्तमान समय में साहित्य लेखन की दिशा व दशा को रेखांकित करते हुए कहा कि आवश्यकता साहित्यिक सृजन की है। उन्होंने कहा कि साहित्य और साहित्यकारों की लुप्त हो रही परम्परा को बचाए रखने के लिए युवा पीढ़ी को साहित्य सृजन करना होगा।

आध्यात्मिक व्यक्तित्व की धनी कंकू केसर आई ने कहा कि मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस अनमोल जीवन को मानवता के उत्थान हेतु समर्पित कर भाईचारे एवं प्रेम का वातावरण बनाने में अर्पित करना होगा। साथ ही राष्ट्र उत्थान हेतु नारी सशक्तीकरण और स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिकता से कार्य करने होंगे।

अध्यक्षता करते हुए कुलाधिपति प्रो. बलवंत राय जॉनी ने साहित्य और साहित्यकारों की उन्नत परम्पराओं को बनाए रखने के लिए साहित्यिक -सांस्कृतिक सम्बंधों को बेहतर बनाने तथा पारम्परिक वैचाारिक आदान-प्रदान करने की बात कही। जॉनी ने बताया कि वर्तमान में अर्थ के लिए मूल्यों को अनदेखा किया जा रहा है। मूल्यों की पुनर्स्थापना में साहित्यिक आदान-प्रदान की महत्वपूर्ण भूमिका है। राजस्थान व गुजरात की परम्पराओं में समानता होने के साथ-साथ एकजुटता एवं दृढ़ता भी प्रतिबिम्बित होती है।

मुख्य अतिथि पर्यावरणविद् डॉ. राजेन्द्र सिंह ने कहा कि समाज में शुभ की भावना प्रेरित करने के लिए प्रकृति के ज्ञान-तंत्र को जन-जन से जोड़ना होगा। उन्होंने कहा कि जल, जंगल, जमीन के रक्षण, संरक्षण भारतीय ज्ञान-तंत्र और भारतीय-आस्था से ही संभव है। प्रकृति को भगवान के रूप में स्वीकार, उसके सम्मान में उठते हाथ ही इस सृष्टि के सम्बल बन पाएंगे। प्रकृति की गोद का संयमित उपयेाग तथा स्वावलम्बी वृत्ति अपनाकर ही उसके प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण कर पाएंगे।

श्रीकाग से सम्मानित होने पर डॉ. भानावत ने कहा कि मनुष्य का प्रथम गुण है निर्भय रहे। अपेक्षा और उपेक्षा दोनों से ही बचे। साथ ही किसी को भी न तो प्रभावित करने की चेष्टा करे और न ही आसानी से किसी से भी प्रभावित हों। यह विशिष्ट प्रवृत्ति साहित्यसृजन से ही पोषित हो सकती है। डॉ. भानावत ने नव साहित्यकारों और सृजनकर्ताओं को निरंतर नया लिखने के लिये प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन की मुश्किलों से ना डरें, हमेशा डटे रहें, अपने उसूलों तथा मूल्यों के आधार पर चाहे जितना बीहड़ हो, सृजन से बेखौफ रास्ता तय करें।

कुल प्रमुख बी. एल. गुर्जर ने कहा कि साहित्य एवं सनातन धर्म दोनों ही मानव कल्याण के लिए हैं। दोनों का संतुलित समागम समाज को सही दिशा प्रदान कर भारतीय जनमानस का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अतः मानवता को प्रतिष्ठित करने में साहित्य व सनातन धर्म दोनों की ही गहरी भूमिका है।

समारोह में अतिथियों द्वारा सहायक आचार्य डॉ. चन्द्रेश कुमार छतलानी द्वारा रचित 'हाल ए वक्त' लघुकथा संग्रह पुस्तक का विमोचन किया गया। संचालन डॉ. अमी राठौड़, डॉ. इंदू आचार्य ने किया जबकि आभार भंवरलाल गुर्जर ने जताया। समारोह में विद्यापीठ के डीन, डायरेक्टर व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

# आदमी की जान से बड़ा कुछ भी नहीं है

**दिल्ली (ह. सं.)।** सुप्रसिद्ध लेखक प्रियदर्शन ने हिन्दू कालेज में आयोजित संगोष्ठी 'साहित्य और देश' में

कहा कि हमें देश और साहित्य के सम्बन्ध को ठीक ढंग से परिभाषित करने के लिए रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे मनीषी को पढ़ना चाहिए। साहित्य हमारे भीतर उन संवेदनाओं का पोषण करता है जिनसे भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण कर हम बेहतर मनुष्य बन पाते हैं। प्रियदर्शन ने सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता 'देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता' को उद्धृत कर कहा कि इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा कुछ भी नहीं है। अदनान कफ़ील दरवेश ने कहा कि साहित्य मनुष्य के तरलतम रूप को उजागर करता है तथा व्यक्ति के जीवित होने का प्रमाण देता है। भाषासिंह ने मूलभूत तथा दिखावटी विकास के तथ्यों का वर्गीकरण करते हुए युवाओं के मन मस्तिष्क से नफरत खत्म करने के लिए शिक्षा पर जोर दिया। प्रो. रामेश्वर राय ने साहित्य और देश के बहुक्षेत्रीय रिश्तों की चर्चा की। हिंदी साहित्य सभा के परामर्शदाता डॉ. पल्लव ने अंत में सभी का आभार ज्ञापित किया।

# रामनवमी या रावणनवमी?

**- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -**

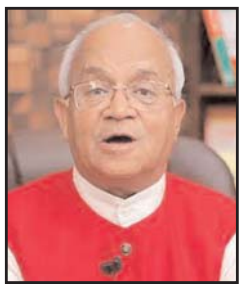

इस बार भारत में हमने रामनवमी कैसे मनाई ? हमने रामनवमी को रावणनवमी में बदल दिया। देश के कई शहरों और गांवों में एक समुदाय के लोग दूसरे समुदाय से भिड़ गए। यहां तक की जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के छात्र, जिन्हें देश में अत्यंत प्रबुद्ध माना जाता है, वे भी आपस में भिड़ गए। कई शहरों में लाठियां, ईंट और गोलियां भी चलीं। कुछ प्रदर्शनकारी पुलिस की ज्यादती के भी शिकार हुए। यह सब हुआ है, उसके जन्म दिन पर, जिसे अल्लामा इक़बाल ने 'इमामे हिंद' कहा है। इकबाल का शेर है-

है राम के वजूद पे हिंदोस्तां को नाज़।
अहले-नज़र समझते हैं इसको इमामे हिंद!!

राम को भगवान भी कहा जाता है और मर्यादा पुरुषोत्तम भी। लेकिन राम के नाम पर कौनसी मर्यादा रखी गई? राम को सांप्रदायिकता के कीचड़ में घसीट लिया गया। इसके लिए हमारे देश के वामपंथी और दक्षिणपंथी तथा हिंदू और मुसलमान, दोनों जिम्मेदार हैं।

यदि रामनवमी का उत्सव मना रहे पूजा-पाठी छात्र कह रहे हैं कि पूजा-स्थल के तंबू के पास ही छात्रावास में मांस पकाया और खिलाया जा रहा है तो उससे हमें दुर्गंध आती है तो उनका दिल रखते हुए मांसाहार कहीं और भी उस समय करवाया जा सकता था और यदि मांसाहारी छात्र चाहते तो पूजा के घंटे भर पहले या बाद में भी भोजन कर सकते थे लेकिन यह झगड़ा तो न राम से संबंधित था और न ही मांसाहार से! इसके मूल में संकीर्ण राजनीति थी।

वामपंथ और दक्षिणपंथ की! मांसाहार का समर्थन करनेवालों में हिंदू छात्र भी थे। हिंदू मांसाहारी तो अपना औचित्य ठहराने के लिए भवभूति के ग्रंथ 'उत्तरराम चरित्रम', प्रसिद्ध तांत्रिक मत्स्येंद्रनाथ और गोरखनाथ और चार्वाक के मद्यं, मांसं, मीनश्च, मुद्रा, मैथुनमेव च श्लोक तथा उपनिषदों के कई प्रकरणों को भी उद्धृत कर डालते हैं।

वे वेदमंत्रों के भी मनमाने अर्थ लगा डालते हैं लेकिन वे वैज्ञानिकों और अर्थशास्त्रियों के उन तथ्यों और तर्कों को मानने के लिए कभी भी तैयार नहीं होते कि मांसाहार स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था के लिए घाटे का सौदा है। इसी तरह कुछ शहरों में मंदिरों और मस्जिदों के आगे भी बम फोड़े गए, पत्थर मारे गए और गोलियां तक चलीं। आप क्या समझते हैं कि यह काम किसी सच्चे ईश्वरभक्त या अल्लाह के बंदे का हो सकता है? बिल्कुल नहीं!

यदि कोई सच्चा ईश्वरभक्त या अल्लाह का बंदा है तो उसके लिए ईश्वर और अल्लाह अलग-अलग कैसे हो सकते हैं? वह तो एक ही है। बस, उसकी भक्ति के रुप अलग-अलग हैं। ये रूप देश-काल और परिस्थितियों से तय होते हैं। यदि सारे विश्व में देश-काल और परिस्थितियां एक-जैसी होतीं तो इतने सारे धर्म, मजहब, रिलीजन होते ही नहीं। इस विविधता को धर्मांध लोग नहीं समझ पाते हैं। इसीलिए वे रामनवमी को रावणनवमी बना डालते हैं। किसी शायर ने क्या खूब लिखा है-

आए दिन होते हैं, मंदिरों-मस्जिद के झगड़े,
दिल में ईंट भरी हैं, लबों पर खुदा होता है।

# अरमानों की अर्थी

वो अपने अरमानों की अर्थी
अपने ही कांधे पर लिए फिरता रहता है।
अपनी ख्वाहिशों को अपने ही
नंगे पैरों तले कुचलता रहता है।
मैं अपने घर की पक्की छत के नीचे
अपने अरमानों की फ़ेहरिश्त बढ़ाता रहता हूँ।
वो कच्चे घर की भीगी छत के नीचे
अपनों की ख्वाहिशों के सपनें
अपनी आँखों में लिए सोता रहता है।
अपने अरमानों की फेहरिस्त
अपने ही हाथों मिटाता रहता है।
मैं दुआओं के लिए मंदिर में पैसा
मस्ज़िद में चादर चढ़ाता रहता हूँ।
वो उन्ही दैरो-हरम के बाहर
फटी चादर में हाथ फैलाए खड़ा रहता है,
दुआओं के लिए नहीं, दो जून रोटी के लिए
जद्दो-जहद करता रहता है।
मैं शून्य के आगे कई शून्य जोड़ने की
कवायद में लगा रहता हूँ।
सौ को हजार, फिर लाख,
फिर लाखों की दौड़ में
अपनों को छोड़ आगे बढ़ता रहता हूँ।
वो अपनों की खातिर एक-एक रूपया
जोड़ने में हर रोज जिंदगी दाव पर लगाता रहता है,
फिर भी जिंदगी के इस अंतहीन सफर में
वो मुझसे ज्यादा खुश नज़र आता है,
शायद इसलिए कि
मैं अपने लिए जीता रहता हूँ,
वो अपनों के लिए मरता रहता है।

**- हेमेन्द्र सेठ**


महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

ARCHI
Creating Signature Address Since 1998
27 Projects | 4000 Happy Faces | 23 years of Legacy | 25 Lac sq.ft. Space Delivered | 8 Ongoing Projects

PEACE PARK
feel the peace.....
Near Completion
2/3/4 BHK Premium Apartments
• Rera No.: Phase 1 - RAJ/P/2019/1027 Phase 2 - RAJ/P/2019/1028
• 1-New Vidhya Nagar Hiran Magri, Sec. 4, Udaipur (Raj.)
• Contact: 80035 97929

Royal City
आपका घर - आपके बजट मे
Ready Possession
1/2/3 BHK Apartments
• Rera No.: RAJ/P/2018/625
• Airport Rd, Pratapnagar, Opp Hotel Valley View Udaipur (Raj.)
• Contact: 95880 16563

Pearl Paradise
Under Construction
3 & 4 BHK Luxury Apartments
• Rera No.: RAJ/P/2020/1233
• Meera Nagar, Shobhagpura Mikado School Rd. Udaipur (Raj.)

The Harmony
AN URBAN LIVING
Under Construction
3 & 4 BHK Signature Apartments
• Rera No.: RAJ/P/2021/1500
• RK Circle - Shobhagpura Road Opp Coffee Culture. Udaipur (Raj.)

ARCADE
Near Completion
2/3/4 BHK Premium Apartments
• Rera No.-RAJ/P/2019/964
• New Bhopalpura Behind Laxman Vatika Udaipur, (Raj.)

LOVENEST
Under Construction
2 & 3 BHK Apartments
• Rera No.: RAJ/P/2019/1156
• Rajeshwari Resort Geetanjali Road Manwakheda, Udaipur (Raj.)

ARCHI'S GALAXY
मेरा घर, मेरा अभिमान
Ready Possession/Under Construction
2 BHK Affordable Apartments
• Rera No.: RAJ/P/2018/788
• NH 76, Airport Road Opp. Power House Debari, , Udaipur (Raj.)

TLC
Archi's The Lotus County
Under Construction
Furnished Studio Apartments
(A home for holiday)
• Rera No.: RAJ/P/2020/1245
• Udaisagar Lake Road Udaipur (Raj.)

Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road, Nr. JK Paras, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Ph.: +91 75065 04498, 94141 55525 | Web: archigroup.in

बाजार / समाचार

# उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली 40 महिलाएं सम्मानित

**उदयपुर ( ह. सं. )।** सांची ग्रुप द्वारा शौर्यगढ़ रिसोर्ट एंड स्पा में 'सम्मान 2022- वूमन अचीवर्स अवार्ड' का आयोजन किया गया जिसमें समाज के लिए प्रेरणा की प्रतीक बनी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली 40 महिलाओं को मुख्य अतिथि बॉलीवुड अभिनेत्री नीलम कोठारी, आबूधाबी से हीज एक्सीलेंसी जुल्फीकार घड़ियाली ग्लोबल पीस एम्बेस्डर यूनाइटेड नेशंस यूनिवर्सिटी फॉर पीस, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने सम्मानित किया।

इस अवसर पर सांची ग्रुप के चेयरमेन शांतिलाल मारू, सांची ग्रुप के डायरेक्टर संदीप मारू, चिराग मारू सोनाली मारू, नेशलन हेड सेल्स एंड मार्केटिंग मोहित शर्मा, हेड सेल्स एंड मार्केटिंग इंटरनेशनल हुसैन घीवाला, शौर्य कलेक्शन होटेल्स एंड रिजॉर्ट के जनरल मैनेजर रूपम सरकार उपस्थित थे। जूरी में हसीना चक्कीवाला, यूसीसीआई के पूर्व उपाध्यक्ष आशीष छाबड़ा, सोनाली मारू तथा रूपम सरकार शामिल थे।

अभिनेत्री नीलम कोठारी ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिये सांची ग्रुप द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम महिलाओं को और आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने कहा कि मैं 16 वर्ष की उम्र में फिल्मों से जुड़ी और 40 फिल्मों में कार्य किया। शांतिलाल मारू ने कहा कि सांची सम्मान 2022 का उद्धेश्य महिलाओं को उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रोत्साहन करना और बढ़ावा देना है।

समारोह में शिक्षाविद्, शिक्षक, उद्यमी, कलाकार, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर, बेंकर्स, आहार विशेषज्ञ, आभूषण, हस्तशिल्प और कला, योग, फिटनेस एवं वेलनेस, आयात और निर्यात, साहित्य, खेल, परामर्शदाता और सलाहकार, आर्किटेक्ट, फैशन, मीडिया, एविएशन, ब्यूटी एंड मेकओवर, रेडियो जॉकी, सहित अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने पर प्रीति शक्तावत, शिखा सक्सेना, अंजना सुखवाल, डॉ. वसुधा नीलमणि, डॉ. मोनिता बख्शी, अर्चना शक्तावत, श्वेता दुबे, सरोज शर्मा, पुष्पा सिंह, शिखा राठौड़, स्मृति केडिया, मीना खमेसरा, रिद्धिमा खमेसरा, आस्था मुर्डिया, माधवी लोढ़ा, डॉ. दीपा सिंह, शिखा सिंघल, डॉ. शिल्पा गोयल, ममता मीनल राणावत, मीति गोदावत, प्रियंका जोशी, कुमारी विजयश्री शक्तावत, लब्धी सुराणा, मीता खतूरिया, ममता तलेसरा, सौम्या लूथरा, प्रतीक्षा दवे, माहिया चितारा, आकृति मलिक, जिगीशा जोशी, अलका शर्मा, कनिषा मेहता, प्रियंका अर्जुन, एरिका अब्राहम, सुचिता नागोरी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सीपीएस एवं रॉकवुड स्कूल की डायरेक्टर अलका शर्मा को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। दिल्ली के एका बॉलीवुड रॉक बैण्ड की धमाकेदार प्रस्तुतियों ने सबका मन मोह लिया।

अंत में सांची ग्रुप की डायरेक्टर मोनिका मारू ने अतिथियों एवं गणमान्य नागरिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के वेन्यू एवं हॉस्पिटिलिटी पार्टनर शौर्यगढ़ रिसोर्ट एंड स्पा, ट्रेवल पार्टनर डिस्कवरी ट्यूर्स थे।

# उदयपुर में प्रदेश के पहले फूड अड्डा आउटलेट की शुरूआत

**उदयपुर ( ह. सं. )।** वर्ष 2016 में मुंबई के 4 गुजराती लड़कों की 15 साल की मित्रता से बोरिवली के एक छोटे से स्ट्रीट फूड स्टाल से एक सपने की शुरुआत की। कड़ी मेहनत और ग्राहकों की संतुष्टि को प्राथमिकता देते हुए 'फूड अड्डा' से देश को नये स्वाद की सौगात दी है। उदयपुर में न्यू फतहपुरा में फूड अड्डा का नया आउटलेट देश का नवां राज्य में 51वां आउटलेट है।

फूड अड्डा के सीइओ और स्थापक हार्दिक सावला ने कहा कि यह अभुतपूर्व अनुभव है कि हमने स्ट्रीट स्टॉल के रूप में पचास हजार रूपये में फूड अड्डा की शुरूआत की थी जो कि अब देश के नौ राज्यों में 51 आउटलेट्स के साथ ही 40 करोड़ की संस्था बन चुकी है। जल्द ही हम देश में ज्यादा से ज्यादा आउटलेट्स खोलेंगे। हमारी प्रतिबद्धता सर्वोत्तम स्वच्छता और स्वाद के साथ बेहतर सेवा देने की है। फूड अड्डा के सपनों की यात्रा में उदयपुर आउटलेट के फ्रेंचाइजी पीयूष पामेचा, प्रतीक सिसोदिया और जितेन्द्र चिकारा के जुड़ने पर मैं उन्हें बधाई देता हूं।

परवाह हॉस्पिटेलिटी के चैयरमेन वैभव पटेल ने कहा कि 2016 में इसकी शुरूआत के समय यह कदम आसान नहीं था। इसे टीमवर्क से संभव कर दिखाया। हमने सत्रह घंटे तक काम कर अपने जीवन का कीमती समय और अनुभव फूड अड्डा की शुरूआत के लिए दिया। यदि हम किसी काम को लगन, जुनून और मेहनत से करते हैं तो उसे पूरा करने का सपना सच होता है। हम रोज सीखते हैं और आगे बढ़ रहे हैं।

ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर और मास्टर शैफ पार्थ मेहता ने कहा कि फूड अड्डा देश का एकमात्र ब्रांड है जो काम्पेक्ट कीचन के साथ एक छत के नीचे 200 से अधिक व्यंजन उपलब्ध कराता है। हम नियमित व्यंजनों में नयापन और फ्यूजन स्वाद उपलब्ध कराते हैं। उदाहरण के लिए वेज सेंडवीच की साधारण सी डीश भी हमारे द्वारा तैयार की गई चटनी के स्वाद के साथ एक अलग आनंददायक अनुभव देती है।

# जिगिशा जोशी द्वारा सप्तरंग स्टोर का उद्घाटन

**उदयपुर ( ह. सं. )।** अशोक नगर स्थित सप्तरंग स्टोर का उद्घाटन मेवाड़ी बाई के नाम से प्रसिद्ध जिगिशा जोशी ने किया। ब्रांड ओनर हर्षा कुमावत ने बताया कि जल्दी ही ब्रांड ए कामर्स पर भी उपलब्ध होने जा रहा है। इस आउट्लेट पर रेडिमेड और कस्टम मेड दोनों प्रकार के आउट्फिट उपलब्ध हैं। शीघ्र ही बच्चों के एथनिक आउट्फिट उपलब्ध होंगे। यह ब्रांड महिलाओं के द्वारा महिलाओं के लिए तैयार किया गया एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहां लोकल आर्टिजन के काम को फैंशन में ढाला गया है। जिगिशा जोशी ने बताया कि इस स्टार्टप की मेवाड़ में काफी जरूरत है।

# राष्ट्रीय रिसर्च वेबिनार आयोजित

**उदयपुर ( ह. सं. )।** पेसिफिक डेंटल कॉलेज, देबारी के जन स्वास्थ्य दंत चिकित्सा विभाग द्वारा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों एवं फेकल्टी के लिए ऑनलाइन रिसर्च वेबिनार आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता सेलम, तमिलनाडू की डॉ. रीना रेचल जॉन ने विद्यार्थियों को रिसर्च टॉपिक के चुनाव से सम्बंधित गुरू सिखाए। मुख्य वक्ता चेन्नई के डॉ. श्याम सिवासामी ने रिसर्च में प्रयोग किए जाने वाले स्टेटिसटिकल तरीकों के उपयोग से अवगत कराया। कार्यक्रम में भारत के विभिन्न डेन्टल कॉलेजों के कुल 200 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रिंसिपल डॉ. भगवानदास राय, डॉ. कैलाश असावा, डॉ. मृदुला सहित अन्य दन्त चिकित्सक मौजूद रहे।

# 'माई स्पेस श्रीनंदा' एवं रेस्टोरेंट 'अप द स्काई लॉज' का शुभारंभ

**उदयपुर ( ह. सं. )।** शहर में अशोक नगर मेन रोड़ स्थित अमृतश्री बिल्डिंग में होटल 'माई स्पेस श्रीनंदा' एवं रेस्टोरेंट 'अप द स्काई लॉज' का शुभारंभ जीडीबी होटल्स एंड रिसोर्ट प्रा. लि. के उपाध्यक्ष निशांत कुमार, हेड बिजनेस डवलपमेंट नोर्थ सुकान्तो घोष, माई स्पेस श्रीनंदा के प्रोपराइटर महेन्द्र कुमार व्यास तथा चन्द्रेश व्यास ने किया। इस मौके पर वाइस प्रेसीडेंट सेल्स नोर्थ, अरविंद राजदान, सेल्स मेनेजर हितेष नागदेव, पराग व्यास, देव व्यास उपस्थित थे।

महेन्द्र कुमार व्यास तथा चन्द्रेश व्यास ने बताया कि होटल श्रीनंदा अब 'माई स्पेस श्रीनंदा' एवं रेस्टोरेंट 'अप द स्काई लॉज' हो गया है। माई स्पेस जैसी बड़ी व प्रतिष्ठित शृंखला व आकर्षक ब्रांड से जुड़ने के बाद अब इसकी सेवाओं का दायरा विश्व स्तरीय हो गया है। ग्रेट डेस्टिनेशन होटल्स एंड रिसॉर्ट्स के तहत माई स्पेस एक आकर्षक होटल ब्रांड है। यह होटल उन लोगों के लिए सर्वोत्कृष्ट है जो अपने बजट के अनुकूल सर्वोत्कृष्ट होटल की तलाश में हैं।

जीडीबी होटल्स एंड रिसोर्ट प्रा. लि. के उपाध्यक्ष निशांत कुमार ने बताया कि 'माई स्पेस श्रीनंदा' एवं रेस्टोरेंट 'अप द स्काई लॉज' शहर के मध्य में सारी सुविधाओं से युक्त है। होटल के सभी कमरों से शहर का शानदार व्यूह नजर आता है। सभी कमरें एयरकंडीशनर से युक्त बड़े, व्यवस्थित एवं सुकुनदायक हैं। यहां 300, 450, 700 स्क्वायर फीट के कमरे, 3500 स्क्वायर फीट का बैंक्विड हॉल है जिसमें 100-150 लोगों के बैठने की व्यवस्था है। यहां बर्थडे पार्टी, रिंग सेरेमनी, शादी की सालगिरह की पार्टी की जा सकती है।

पराग व्यास ने बताया कि विश्व की नंबर वन सिटी झीलों की नगरी उदयपुर में सेवाओं का विस्तार करना हमारे लिए गौरव की बात है। हम इस शहर की गर्मजोशी से मेजबानी और अपनेपन की तासीर तथा यहां की समृद्ध परम्पराओं से रोमांचित हैं। हमारा मिशन भारत में हॉस्पिटैलिटी सर्कल का प्रमुख ब्रांड बनना है जो अपनी साख के अनुरूप तेजी से विस्तार करते हुए मेहमानों, कर्मचारियों और निवेशकों की हर अनिवार्य आवश्यकता को पूरा करता हो। देव व्यास ने कहा कि इस नए होटल के लिए हम होटल श्री नंदा के साथ साझेदारी करके गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। यह राजस्थान के साथ-साथ उदयपुर में हमारा पहला 'फुटप्रिंट' है और हम यहां सर्वोत्तम सेवाएं देने के प्रति आश्वस्त व प्रतिबद्ध हैं।

# साहिल पूनिया का नेशनल टीम कैंप में चयन

**उदयपुर ( ह. सं. )।** हिंदुस्तान जिंक के जिंक फुटबॉल अकादमी के 15 साल के गोलकीपर साहिल पूनिया को भारत की अंडर-16 नेशनल कैंप के लिए चुना गया है। भारतीय टीम इन दिनों श्रीलंका में होने वाली सैफ अंडर-16 चैम्पियनशिप की तैयारी में जुटी है। जिंक फुटबॉल अकादमी की टीम ने बीते सप्ताह गोवा में भारत की यू-16 नेशनल टीम, डेम्पो स्पोर्ट्स क्लब (यू-18) और टीम सुपर 30 के साथ दोस्ताना मैच खेले थे। हरियाणा के हिसार के लाडवा गांव में जन्मे साहिल पूनिया ने इस टूर पर बेहतरीन प्रदर्शन किया था और यहीं से वह चयनकर्ताओं के ध्यान में आए। इसके बाद पूनिया का तत्काल शिविर के लिए चयन हो गया, जबकि अकादमी के कुछ और खिलाड़ियों को आने वाले दिनों में कैम्प के लिए बुलाए जाने की उम्मीद है। साहिल के पिता पेशे से किसान हैं और अपने बेटे को देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलने की खबर सुनकर उनकी खुशी सातवें आसमान पर है। साहिल पूनिया ने कहा कि मैं माता-पिता, हिंदुस्तान जिंक, उदयपुर अकादमी के सभी कोचों और कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मुझे अपने सपनों को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान किया।

# महावीर युवा मंच का होली-गणगोर मिलन

**उदयपुर (ह. सं.)।** महावीर युवा मंच द्वारा होली गणगोर उत्सव

आयोजित किया गया जिसमें 35 सदस्यों ने सपरिवार अपनी उपस्थिति दी। अध्यक्षता संरक्षक प्रमोद सामर ने की। आरम्भ में मंच अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने जानकारी दी कि कोरोनाकाल में मंच को सबसे बड़ा आघात इसके होनहार सदस्य नेमि जैन, भंवरलाल पोरवाल तथा श्रीमती सुनीता कोठारी के असामयिक निधन का रहा। इस पर पूर्व अध्यक्ष निर्मल पोखरना ने कहा कि स्मृति शेष सभी विशिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे जिनका कई दृष्टियों से मंच को सहयोग मिला। उनकी यादगार को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए कोई स्थाई महत्व की योजना होनी चाहिये। संरक्षक प्रमोद सामर ने सुझाव दिया कि आजकल परिवार का आशय केवल पति-पत्नी तक सीमित हो गया है। ऐसी स्थिति में बच्चे विमुख हो गये हैं। हमें उनके लिए ऐसे आयोजन करने चाहिये जिससे उनका समुचित विकास हो सके। विभिन्न गतिविधियों द्वारा उनके शारीरिक एवं मानसिक पक्ष को जैनत्व के संस्कारों से सुगम बनाया जा सकता है। इस अवसर पर महामंत्री हर्षमित्र सरूपरिया, मुकेश हिंगड़, नीरज सिंघवी, अर्जुन खोखावत, दिलीप मोगरा, भगवती सुराणा, रानु भाणावत, अजय पोरवाल, कुलदीप नाहर, विक्रम भण्डारी, डॉ. स्नेहदीप भाणावत ने अपने विचार साझा किये। महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा प्रमीला पोरवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

# जिंक मास्टर्स ऑफ रिस्क अवार्ड से सम्मानित

**उदयपुर (ह. सं.)।** हिन्दुस्तान जिंक को मास्टर्स ऑफ रिस्क का अवार्ड मिला है। मुबई में हुए द इंडिया रिस्क मैनेजमेंट अवार्ड के आठवें संस्करण समारोह में यह पुरस्कार जिंक की एमएएस (मैनेजमेंट अश्योरेंस सर्विस) टीम को फ्रॉड प्रिवेंशन और ऐथिक्स मैनेजमेंट के लिए प्रदान किया गया। समारोह में आईसीआईसीआई लोम्बार्ड के एमडी एंड सीईओ भार्गव दासगुप्ता, सीएनबीसी-टीवी 18 की

कार्यकारी संपादक लता वेंकटेश एवं प्रसिद्ध बिजनेस स्टेऊटेजिस्ट निर्मल्या कुमार शामिल हुए।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने कहा कि जिंक में रिस्क मैनेजमेंट प्रोफाइल अत्यधिक पारदर्शी प्रणाली पर आधारित है जिसमें सभी स्तरों पर टीमों को विभिन्न ऑनलाइन रिपोर्टिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसी भी प्रकार के जोखिम की श्रेणी की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह पुरस्कार हमारे सिस्टम और प्रक्रियाओं के लिए एक लीगेसी है।

**मरणासन्न भीष्मों से.....**

**(पृष्ठ एक का शेष)**

यह सूत्रधार ही मण्डली का उपस्थापक (प्रोड्यूसर) तथा नाट्याचार्य (निदेशक) दोनों होता है। प्राय: आदि से अन्त तक मंच पर बना रहता है। वह प्राय: कवि और गायक भी होता है और गाकर गीत एवं पद-संवादों के भाव और अभिनय की न केवल पात्रों को शिक्षा देता है, उन पर अनुशासन करता है और अंकुश भी रखता है।

नाट्याभिनय के प्रयोग की समस्त सामग्री परिधान, मुकुट, आभूषण, मुखौटे, रंगोपकरण, रंगसज्जा के उपस्कर आदि उपस्थापक की अपनी सम्पत्ति होती है। मण्डली को वर्ष भर बनाये रखने के लिए भागवत् लेकर गांव-गांव घूमता है और मण्डली के लिए अर्थोपार्जन करता है। मण्डली एक प्रयोग के लिए यजमान की शक्ति और श्रद्धा के अनुसार पांच-छह सौ या अधिक दक्षिणा ले लेती है।

'गवरी' भारत का एक ऐसा लोकनाट्य है जिसमें सौ-सौ तक कलाकार एक साथ भाग लेते हैं। इन कलाकार में से ही एक या अधिक पात्र ऐसे होते हैं जो विदूषक या उसके विविध अन्य नामों से विख्यात हैं।

लोकनाट्य मर्मज्ञ पद्मश्री देवीलाल सामर ने इस प्रभाव को स्वीकार करके ही एक स्थल पर लिखा है कि लोकनाट्य की सारी विधाएं अपने पारम्परिक रूप में रह कर ही अब अधिक सशक्त रूप से जी पानी मुश्किल है। डॉ. श्याम परमार के शब्दों में 'जिन लोककलाओं में आज के जीवन के साथ बने रहने की क्षमता है, वे स्वयं भी नई परिस्थितियों में किसी-न-किसी तरह अपना अस्तित्व साक्षात् कर लेती हैं।'

यह सत्य है कि आज भी लोकाश्रय ही लोकनाट्यों का सबसे बड़ा संरक्षक है किन्तु चलचित्र, रेडियो आदि के कारण लोकमानस विकृत हो चुका है, उसकी रूचियां बिगड़ चुकी हैं और वह अब नौटंकी, स्वांग, तमाशा, भवाई आदि के नाम से मुंह बिचकाने लगा है। जीर्ण परिधान, जर्जर साज, घिसे-पिटे रंगोपकरण, ये उसकी इस दयनीय स्थिति पर आंसू बहाते हैं। वे किसके लिये प्रयोग करें, किससे प्रयोग करें, क्या प्रयोग करें क्योंकि लोकनाट्य का नित प्रति सिकुड़ता हुआ हाट उसे हतोत्साह करने के लिए पर्याप्त है।

केवल डूबते हुए जलयान का छाया चित्र ले लेने से कुछ न होगा। उसे बचायें और यदि न बचा सकें तो उसकी परम्परा में नये-नये अधिकारों और रूचियों, आकर्षक परिकल्पनाओं और रंगों को समन्वित कर नये जलयानों का निर्माण करें। लोकनाट्य भी डूब रहे हैं। उनका ध्वनि आलेखन, फिल्मीकरण, चित्रांकन या छायालेखन ही पर्याप्त नहीं है, वयोवृद्ध सूत्रधारों और कलाकारों का सम्मान-अभिनन्दन कर उन्हें पारम्परिक लोकनाट्य के शिक्षण के लिए नियुक्त करें। वे मरणासन्न भीष्म हैं, जिनसे नये अर्जुनों को नवयुग के लिए, परम्परा के पोषण और विकास के लिए, लोकनाट्य कला का सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान ग्रहण कर लेना चाहिये।

# के. एम. सी. पोस्टर विमोचित

**उदयपुर (ह. सं.)।** संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने के. एम. सी. विषयक पोस्टर का विमोचन किया।

इस अवसर पर गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के सीईओ प्रतीम तंबोली, बाल रोग विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र सरीन तथा नवजात शिशु इकाई विभागाध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता मौजूद थे। पोस्टर को डॉ. सरीन तथा डॉ. गुप्ता द्वारा तैयार किया गया।

संभागीय आयुक्त ने बताया कि यह पोस्टर जन-जन में नवजात शिशु सुश्रुषा के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। इससे ना केवल शहरों के बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के स्वास्थ्य केंद्रों पर भी उपलब्ध कराया जाए। डॉ सरीन ने बताया कि के. एम. सी द्वारा नवजात एवं शिशु मृत्यु दर दोनों को कम करने में यह अत्यंत सहायक है। दो किलोग्राम से कम वजन के नवजात शिशुओं को के. एम. सी करवाने पर उनका ना केवल शारीरिक बल्कि मानसिक विकास भी तीव्रता से होता है।

प्रतीम तंबोली ने बताया कि के. एम. सी. की विधि माता पिता घर पर भी जारी रख सकते हैं जब तक कि नवजात का वजन ढाई किलोग्राम तक ना हो जाए।

# मुनिद्वय ने पूछी डॉ. भानावत की कुशलक्षेम

**उदयपुर (ह. सं.)।** श्रमणसंघीय सलाहकार दिनेश मुनि के प्रमुख एवं प्रखर पदयात्री पंडित प्रवर डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि तथा राष्ट्रसंत गणेश मुनि के पट्ट शिष्य उपप्रवर्तक मधुर व्याख्यान विभूति जिनेन्द्र मुनि ने बड़े सवेरे प्रात: भ्रमण के दौरान

लोकसंस्कृति मनीषी डॉ. महेन्द्र भानावत के निवास पर पहुंच उनकी कुशलक्षेम पूछी और मंगलिक प्रदान की।

इस अवसर पर डॉ. भानावत, उनके सुपुत्र डॉ. तुक्तक, बहू रंजना एवं आत्मजा डॉ. कविता मेहता से अंगूरी गोचरी ग्रहण की। डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि ने बताया कि तीन वर्ष पश्चात पिछले दिनों उनका उदयपुर आगमन हुआ है और शीघ्र ही अगले चातुर्मास के लिए पूना प्रस्थान करने वाले हैं।

# सम्प्रति संस्थान द्वारा कपिल श्रीमाली का अभिनंदन

**उदयपुर (ह. सं.)।** सम्प्रति संस्थान द्वारा जानेमाने पत्रकार कपिल श्रीमाली का लेकसिटी प्रेस क्लब अध्यक्ष बनने पर भावभीना अभिनंदन किया गया। मुख्य अतिथि समाजसेवी उद्यमी हिम्मतसिंह चौहान थे।

सम्प्रति के महासचिव डॉ. तुक्तक भानावत ने कपिल श्रीमाली को शॉल तथा स्मृतिचिन्ह प्रदान किया। आभार व्यक्त करते हुए कपिल ने कहा कि मेरी प्राथमिकता लम्बे समय से अटके पत्रकारों को प्लाट आवंटन कराने तथा मेडिकल सुविधाएं प्रदान कराने की रहेंगी। इस अवसर पर मुकेश जैन, शैलेष नागदा, अजय सरूपरिया, अजय आचार्य, भूपेन्द्र चौबीसा उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों लेकसिटी प्रेस क्लब के हुए चुनाव में अध्यक्ष पद से कुल 122 मतों में से कपिल ने 114 मत प्राप्त कर बढ़त ली थी। यह चुनाव कोरोना के कारण करीब चार वर्ष बाद हुआ। वर्तमान में श्री कपिल न्यूज 18 के उदयपुर ब्यूरो चीफ हैं।

# जापानीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैन्युफैक्चरिंग एक्सीलेंस का उद्घाटन

**उदयपुर (ह. सं.)।** दायकिन एयर कंडीशनिंग इंडिया प्रा. लि. ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पहल के तहत नीमराना में दायकिन जापानीज इंस्टीट्यूट ऑफ मैन्युफैक्चरिंग एक्सीलेंस (डीजीआईएमई) का उद्घाटन किया। डीजीआईएमई का उद्देश्य छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की पेशकश करना है। उनके कार्यकाल के दौरान ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण, एचवीएसी तकनीकी ज्ञान, सॉफ्ट-स्किल प्रशिक्षण और जापानी निर्माण प्रक्रियाओं के प्रशिक्षण के साथ एक संयुक्त पाठ्यक्रम शामिल है। सभी प्रशिक्षुओं को कार्यक्रम के पूरा होने पर डीजीआईएमई सर्टीफिकेशन प्राप्त होगा। कंपनी का लक्ष्य 2025 तक 1,50,000 भारतीय युवाओं को जापानी विनिर्माण प्रक्रियाओं और सिद्धांतों पर प्रमाणित करना है जो एचवीएसी इंडस्ट्री को कौशल की कमी को पूरा करने में मदद कर सकते हैं।

दायकिन इंडिया के चेयरमेन एवं एमडी के. जे. जावा ने कहा कि दायकिन इंडिया-जेआईएम भारत में विनिर्माण के लिए कुशल जनशक्ति का एक पूल बनाने के लिए जापान और भारत की सरकारों के बीच सहयोग की शुरुआत का प्रतीक है। यह अर्थव्यवस्था, व्यापार और उद्योग मंत्रालय, जापान सरकार (एमईटीआई) और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार (एमएसडीई) के बीच 10 वर्षों में भारत में 30,000 युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए मैन्युफैक्चरिंग स्किल ट्रांसफर प्रमोशन प्रोग्राम को लेकर11 नवंबर 2016 को टोक्यो में हस्ताक्षरित एक सहयोग ज्ञापन (एमओसी) के अनुसार है। इस स्किलिंग कैंपस का उद्देश्य एयर कंडीशनिंग में प्रशिक्षण को अंतरराष्ट्रीय मानकों पर अपग्रेड करना है। दायकिन में हम टेक्नोलॉजीज और गुणवत्ता में उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध हैं; और यह पहल इन छात्रों को अपने कौशल को बढ़ाने और एयर कंडीशनिंग स्पेस में विश्व स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म प्रदान करेगी।

## जब कुछ लोग दौलत पर गिर रहे थे, तब हम वतन का सीना स्वाभिमान से तान रहे थे : मेवाड़

**उदयपुर ( ह. सं. )।** चित्तौड़गढ़ के बड़ीसादड़ी में आयोजित

ऐतिहासिक राम-रावण मेले में मेवाड़ पूर्व राजपरिवार के सदस्य लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। इस दौरान अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में शामिल होने के लिए लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ और अंतर्राष्ट्रीय कवि और तारक मेहता फेम शैलेश लोढ़ा का लवाजमा उदयपुर सिटी पैलेस से बड़ीसादड़ी के लिए निकला। मेवाड़ के सम्मान में डबोक भूतखेड़ा, नारायणपूरा टोल नाका, मंगलवाड़ चौराहा, मंगलवाड़ गांव, बिलोदा, डूंगला, एल्वामाताजी, तलाऊ, आलोद मोड़, सांगरिया, भुरकीया, जरखाना मोड़, कानोड़ दरवाजा, घंटाघर चौराहा, बोहरा मस्जिद, जवाहर चौक, आजाद पूरा, गोपाल आश्रम, पंचमुखी बालाजी मंदिर सहित 30 से ज्यादा जगह भव्य स्वागत किया गया।

लक्ष्यराजसिंह ने कहा कि मेवाड़ के हृदय चित्तौड़ से सर्व समाज को साथ लेकर चलने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। इसका आगे भी निर्वहन करते रहना प्रत्येक मेवाड़वासी का कर्तव्य है। मेवाड़ हर विषम परिस्थिति में स्वाभिमान से सीना तानकर खड़ा रहा है और आगे भी रहेगा। जब कुछ लोग दौलत पर गिर रहे थे तब हम अपने वतन का सीना स्वाभिमान से तान रहे थे। मेवाड़ सदियों पूर्व पूरी दुनिया को यह संदेश दे चुका है कि मेवाड़ का पर्यायवाची त्याग, बलिदान और शौर्य ही हैं, जो हम सबकी जीवंत विरासत हैं। इस जीवंत विरासत को हमारी भावी पीढ़ी को सहेजकर चलना होगा।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में तारक मेहता फेम और अंतर्राष्ट्रीय कवि शैलेश लोढ़ा, हास्य कवि कुलदीप झाला, कवि विष्णु सक्सेना, वीर रस के कवि अशोक चारण, कवि गौरी आदि ने काव्य पाठ किया। इस दौरान चित्तौड़गढ़ कलेक्टर अरविंद पोसवाल भी मौजूद थे।

## श्रीनाथजी की सुरक्षा-सेवा में समर्पित श्रीनाथ गार्ड

**- महर्षि व्यास -**

सन 1672 में प्रभु श्री गोवर्धन धरण श्रीनाथजी के मेवाड़ धरा पर पधारने के पश्चात उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी महाराणा राजसिंहजी द्वारा देलवाड़ा रियासत के सामंत झाला जेतसिंहजी व कोठारिया के ठाकुर रुक्मांगदजी को सौंपी गई। यवन सेना के आक्रमण की संभावना को देखते हुए प्रभु की सेवा में एक रेजीमेंट जो कि अश्वारोही, गजारोही, सशस्त्र पैदल सैनिक, सुखपाल, गोपाल निशान, बैंड पलटन एवं तोपों से सुसज्जित एक पलटन हेतु एक रिसाला का निर्माण किया। इस रेजीमेंट के संचालन का संपूर्ण दायित्व देलवाड़ा व कोठारिया की रियासतों के नेतृत्व में था वहीं इस रेजीमेंट पर होने वाले व्यय का भार आरंभ में उदयपुर दरबार द्वारा वहन किया जाता था किंतु इस संपूर्ण सेना के सर्वोच्च प्रशासक के अधिकार तत्कालीन नि. लि. गो. त. श्री मोदरलालजी को प्राप्त थे जिनके द्वारा सर्वप्रथम नाथद्वारा शहर की नींव रखी गई।

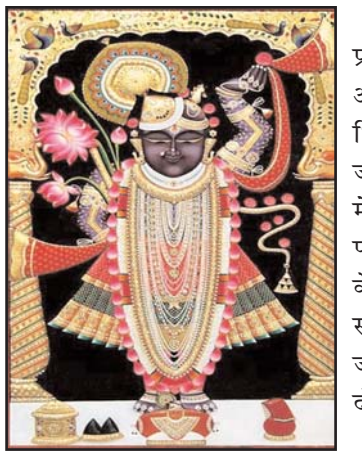

श्री दामोदरजी द्वारा बसाए गए इस सुंदर नाथद्वारा पर सर्वप्रथम पिंडारियों की वक्र दृष्टि पड़ी। उनके द्वारा पहली बार नाथद्वारा में लूटपाट की गई। उनके पश्चात दौलतराव सिंधिया ने नाथद्वारा मंदिर व शहर पर आक्रमण किए। विषम परिस्थितियों को देखते हुए मेवाड़ महाराणा भीमसिंहजी द्वारा श्री गिरधरजी महाराज को प्रभु श्रीनाथजी, नवनीत प्रियाजी को उदयपुर पधारने की विनती की। महाराणा द्वारा प्रभु के रक्षण हेतु कई ठिकानों के सामंतों को सेना सहित भेजा गया। श्रीनाथजी की सुरक्षित निकासी व नाथद्वारा की रक्षा में कोठारिया के रावत विजयसिंहजी युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। सन 1802 में प्रभु का उदयपुर में प्रवास रहा तथा 1803 से 1808 तक श्रीनाथजी घसियार में विराजे और उसी वर्ष अपनी प्रिय धरा नाथद्वारा पधारे।

सिंधिया के आक्र मण से सबक लेते हुए प्रभु श्रीनाथजी की सुरक्षा हेतु महाराणा द्वारा और अधिक सशक्त बड़ी सेना प्रभु के संग भिजवाई गई जिसे बजरंग पलटन के नाम से जाना जाता था। वर्तमान समय में प्रभु-सेवा में समर्पित श्रीनाथ गार्ड्स रेजीमेंट इसी जड़ से फलित वृक्ष के फलस्वरुप है। बजरंग पलटन के समकक्ष एक और पलटन प्रभु-सेवा में संलग्न थी जो गोविंद पलटन के नाम से जानी जाती थी। नाथद्वारा नगर के विकास में इन दोनों पलटनों का योगदान अतुलनीय था।

मंदिर दर्शन व्यवस्था एवं सुरक्षा, भारत भर में स्थित श्रीसम्पदा की सुरक्षा, गणगौर की सवारी, तिलकायतों के जन्मोत्सव, विशिष्ट व्यक्तियों के आगमन पर गार्ड ऑफ ओनर तथा जन्माष्टमी जैसे त्योहारों पर संपूर्ण सुरक्षा का जिम्मा भी इन पलटनों ने बखूबी निभाया। पलटन का तोपची दस्ता जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीजी प्रभु को 21 तोपों की सलामी देता है। सेना के रूप में प्लाटून के रूप में बजरंग पलटन, गोविंद पलटन, रावतान बेड़ा, रिसाला आदि की महत्त्वपूर्ण उपस्थित आजादी के पश्चात 'श्रीनाथ गार्ड' के नाम से मुखातिब हुई। प्लाटून में 4 सेक्शन व हर सेक्शन में 37 जवानों की नियुक्ति; इस प्रकार प्रत्येक प्लाटून में 151 जवानों की संख्या निर्धारित की गई। श्रीनाथ बैंड इसी रेजीमेंट का हिस्सा है जो रियासतकालीन समय से अपनी सेवाएं दे रहा है।

# राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण ( १ )

**- डॉ. महेन्द्र भानावत -**

**घाघरा :**

घाघरा नाभि से लेकर पांव तक के अंगों को ढकने के लिये पहना जाता है। यह घाघरा दो प्रकार से बनाया जाता है- पल्लों से तथा कलियों से। पल्लों वाला घाघरा पल्लों का होता है। कलियों वाला घाघरा कलियां काट कर बनाया जाता है। एक पल्ला एक वार का होता है। इसमें चार कलियां बनती हैं। कलियों में पचास-पचास तथा अस्सी-अस्सी कलियों तक के घाघरे पहने जाते हैं।

गीतों में- 'अस्सी कल्यां रो घाघरो रे कलि-कलि में घेर', जैसे बोल इस बात के प्रमाण हैं। इन घाघरों में पट्टीदार, माझेदार, झालर, भागर, पत्तियां तथा लेर घोटेदार घाघरे विशेष प्रसिद्ध रहे हैं। कमर में घाघरा नाड़े से बांधा जाता है। इसके लिये जो घेर बताया जाता है वह नेफा कहलाता है।

घेर के नीचे मगजी दी जाती है। यह लगभग दो अंगुल चौड़ी होती है। इसके नीचे चार अंगुल चौड़ा माजा लगाया जाता है। इन्हीं घाघरों से नाचा जाने वाला घूमर नृत्य है जो राजस्थान का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य रहा है। छोटी-छोटी लड़कियां जो घाघरा धारण करती हैं उसे घघरी अथवा घाघरी कहते हैं।

**ओढ़ना :**

यह पोत का बनाया जाता है। पोत के दो टुकड़े होते हैं जो पाट कहलाते हैं। दोनों पाट जोड़े जाते हैं। इनमें एक छोटा तथा दूसरा बड़ा होता है। एक की चौड़ाई एक गज तथा दूसरे की आधा गज होती है। यह डेढ़ पटिया ओढ़ना कहलाता है। एक सवा पटिया होता है जिसके दूसरे पाट की चौड़ाई पाव गज होती है। जिसे ओढ़ने का आंगन पीला न होकर हरा, आसमानी, काला, सफेद होता है वह पोमचा कहलाता है। ये पोमचे कई तरह के होते हैं। बादरवन्ये में लाल आंगन तथा काले कोर पल्ले होते हैं।

डाडम्या आंगन तथा नीले कोर पल्ले वाला फागणिया कहलाता है। विधवाओं के ओढ़ने के लिये काला आंगन, लाल छोगे तथा पल्ले पर काले पालव वाला पोमचा नेणसाही कहलाता है। नानण भी इसी प्रकार का होता है। काले आंगन तथा लाल ज्वार वाली साड़ियां भी विधवाओं में प्रचलित रही हैं।

छपे हुए ओढ़ने अंगोछे कहलाते हैं। ये अंगोछे कई रंगों में, कई भांतों के छपाये जाते हैं। इनमें ज्वार तथा बाड़ी भांत अधिक प्रचलित है। एक रंग के ओढ़ने में किसी दूसरे रंग के छींटे दिये जाने पर वह छांटी का ओढ़ना कहलाता है। ये छींटे वाराकूंची से दिये जाते हैं। घाट का आंगन लाल तथा कोर पल्ले और पालब नीले होते हैं। यह विवाह के पश्चात चूड़ा पहनाते समय पहना जाता है।

**कांचली :**

स्तनों को ढकने के लिये स्त्रियां कांचली पहनती हैं। इसका वह कटोरीनुमा भाग जो स्तनों को ढकता है, टूंकी कहलाता है। दोनों टूंकियों के नीचे दायें-बायें जो कपड़ा लगा रहता है वह आड़ा तथा ऊपर का कपड़ा खड़पा कहलाता है।

यह खड़पा ऊबा (खड़ा) तथा आड़ा (सीधा) दो तरह से लगाया जाता है। इन खड़पों के अनुसार भी काँचली का नाम ऊबा खड़पा वाली तथा आड़ा खड़पा वाली कांचली प्रचलित है। कांख के नीचे का तिकोना कपड़ा जो बांह तथा आड़ों को जोड़ता है, खरांक्या कहलाता है । कांचली पीठ पीछे ऊपर तथा नीचे कसी जाती है। कसने का काम कस्यें करती हैं।

ऊपर वाली कस्यों को ऊपरली कस्यां तथा नीचे वाली को नीचली कस्यां कहते हैं। इनके नीचे तिकोने फूंदे लगाये जाते हैं। कांचली के चारों ओर रंगबिरंगे कपड़े की जो पतली गोट दी जाती है उसे मगजी कहते हैं। एक कांचली तनवाली भी होती है। यह तन दोनों टूंकियों के बीच दिया जाता है। इन कांचलियों में चौपड़, खड़बूजा तथा कल्यांवाली कांचलियों का अधिक प्रचलन रहा है। छोटी लड़कियां चोली पहनती हैं। यह कांचली से बड़ी होती है जिससे पूरा पेट ढका रहता है। इसके बटन होते हैं और यह आगे बांधी जाती है। **- क्रमशः**

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।